नं० ५५८८ — घ

धर्मसंवाद:

पत्राणि ४४

पुराणेतिहास संपूर्णम्

नं० ५४८८-ध

5488

F = 45

Complete

धर्मसंवाद:

पत्राणि ४४ (संपूर्णम्)

नं. १९९

नं० ११२

११२

ध॰ १

ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ अथ धर्मसंवाद लि
खते ॥ ॐ ब्राह्मण विवेक कथा होती
भई ॥ नगर जो है हस्तिनापुर लो
लैके पास ॥ तिस विषपुराको ·
लछहनभया ॥ राजा जनमेजय

राजापरीक्षितरावेटा॥ पांडु
वाटापेआ॥ इहैवैशंपायनजी
राजाधर्मब्रह्मब्रध्यिपीहर॥
निकामिलापकेंआकरहोई
है॥ सोतमकरकृपाकरके॥

५ वैशंपायन उवाच ॥ राजा का वच
१ न सुनि कर ॥ श्री व्यास देव जी
का शिष जो है ॥ वैशंपायन
सो कथा कहने लगा ॥ हे राजा
नेमज ॥ एक समे जो है देवता

अहंब्र॥ अहमतीश्वरा॥ अहब्र
ला॥ अहरीश्य॥ अहविस्नु॥ अह
रीज॥ अहचंद्रमा॥ अहविला
यक॥ अहमरास्वतो॥ अहपाणा
जी॥ अहजेमनानी॥ अहपाथव

पं॰ ३

ग्रहवनस्पती॥ ईसमर्शकत्र
वैदैथे॥ नहाजारथामिभया
नारदजीनेदेरिषी॥ जाक
रिकेनमस्कारकरानेभया
ग्रहवचनेकारनेलागी॥

३

नारदउवाच॥ तारकजीकहते
है॥ जोदेवताकेवीचशोक
रजीकानामहै॥ ब्रह्मलोकवि
षमहादेवहै॥ तोमस्पैलोक
विराजातेपीपहिरहे॥ यमोय

पं·
४

सिका पुत्र है ॥ जिस के त्रिलोक·
विषै कोरतनवावतो है ॥ सो त्रि·
सारा ज्ञान कोई आगे देरआ·
है ॥ न कोई होवेगा ॥ के साहेरा
जाजोयाहि ॥ सतिवादी है ॥

५

जैसाराजैतैसेप्रजीत्याहै॥ अरु
धर्मात्माहै॥ तिसराजाकोन:
लकोईनाही॥ सोराजाधर्मका
पुत्रहै॥ अरुजोबडाहोईहै॥ सो
कौणाकौणहोईहै॥ राजावेन॥

५. राजाहरिचंद्र॥ राजावैलोचन
५ राजावलवद्र॥ राजानघ्यचो.
5 घ॥ राजामान दाता॥ ज्ञवाज्ञ रा
विघवडेराज्ञे वडेहारद्ग॥ब्रह
राजाज्ञाथिंष्ट रवगावरकोई

नहीहोई॥जबनारदनेंइतनाव
चनकोहिया॥तबराजाधर्मह
रषवाननहीहोया॥षुशीहोईकर
विचारकरकेमनमेंलोकावि
षेशरहपापातिभया॥अबकोदे

पं ८ घणोनिमित्रायाया। महाभारथ
जेवद्दोरिद्दिश्या॥ ब्रह्मराजप्राप
6 तिद्दोर्या॥ राजाज्ञ्यो ष्टिरत्नः
नवयरमराजाचंडलकात्रू॥
पयारिकौष्ठकोदेघतिश्रायाया॥

श्रीकारि हस्तिनापुर विषेयाप
ति भइया ॥ अरु नगर जो है सो देख
नै लगा ॥ श्रीकारि का देषै ॥ जब
होत निरमल लोके घरसेदर
है ॥ अरु इयो लोक को नाही ॥

ध॰ ८ 7

धर्मात्मा है॥ कैसे भवन है॥ निर्मा
नो कंचन जे से है॥ मनो हर जे ते
से उन के गीत है॥ मनो सर्णमा
से का चांद जे से है॥ तेसे नगर॰
का गार है॥ देष करि राजद्वार

विषैजाईप्राप्तिभईहोया॥अरु
दरवानेकोकहतभया॥औरद
रवानेतैंकैसाहै॥सभनाशास्त्रा
नृज्ञाननहाराहै॥अरुराजाका
इतभारीहै॥यहवचनसुनकर

प॰
८

के॥भीमसेनजद्वारपालथा॥सो
बोलतभर्ई॥भीमसेन उवाच॥है प्रे
नकहांआयाहै॥रथकौंकरिआ
याहै॥तेरीजातीनहींजाणी॥जा
नीनेकोणहै॥राजाकीमंदरावे

8

षेहै॥ ये लोके विषे जाणिया जा
ता है॥ धर्म के छत्र का मंदर है॥
तें कैंा कदि नही जांणता॥ राजा
के द्वार कैं। काढ्या है॥ चंडाल
उवाच॥ हे भीमसेन जी मेरी का

५ सवदेवारकोसपरिहागताहै ॥
२ ब्रह्मेवगारक्षितांहै ॥ तिसकुांस
9 वदहागावतांविषसततांहै ॥
दामाजहैहानकराणेहाणमो
त्रिलोकविषसहाणताहै ॥ भीम

मैनउवाच॥ दैवंअलख्यवाशीहजा
रव्रालातिनअनस्ववर्णकेपा·
वोविधिभोजनकरतेहै॥ अरुभख्या
हारविषस्रावै॥ अथवावंअलख्या
वै॥ अथवामलेछस्रावै॥ अरुमा-

२१ 10

सणतेश्रीहद्रवैशपईनाविषे
तैनाही॥ तेराकौणवणिदेश॥ चेउ
लकामघरेघतेविमदहोवै॥
जोअतराघनाहै॥ अहजावेउ
लनालगलकरनीविसधहवै।

नंकपडीयामसेतअसनानकु
रीहै॥चंद्रलउवाच॥हेभीमसेतनने
रीमैरीतचापकहै॥अरुमासभी
पकहै॥अरुमलसुचभीपकहै॥
चरुपंचोद्रियभीपकहै॥वुराम

प॰
११

चारकौं कारि ब्रेहहै ॥ भीमसेनउ
वाच ॥ हे चंडाल तेरा रंदेतलभी
है ॥ गारद भेके त्याहि है वकोके
त्याहि है ॥ हउमासकौं विवराण
तहै ॥ चंडाल उवाच ॥ तिदकम्रह

पुगालेश्रहपगा१श्रीकीतानाजा
नै॥श्रहज्ञपगा१श्रीकीयनत्रा
वै॥१हिवा१वेंजलहे॥त्रिका
लसप्यातेरहितहोवै॥विपार
हितहोवै॥जोव्रलकमेनेरहि

५· म्हो वै ॥ सेवं जालकाड़ पैड़ ॥ जो
१२ अमृत न कारनां बिना ॥ दंत न·
करनां बिना ॥ अमृत पैर दोवनां बि
ना ॥ जो कोई भोजन करमा दे·
वै ॥ अमृत ठाकर जी को भोग ल

12

गावे विनाघावे ॥ अहअदासवि
नाघावे ॥ सोचें डालका ह्रपहै ॥
कपिलगावाका ह्रथआंणह्रा
लोविनापीवे ॥ अहबलनसो
यहराकरनी ॥ अहवेदकेअं

पं· छेनाविवालो॥ सोभीवंजल·
१३ काह्वपहै। द्वाथीदानलेवै॥ ब्रह
13 दोपहरकेघरुत्रिकालीचावि
धेभोगाकरेसमयाविना॥ सोवं
जलकाह्वपहै॥ ब्रहमेदावस

त्रिकेलाषाई॥ सो चंडालका त्रप
हे॥ गाऊ त्रपणि जाणि ग्रावणि
ग्रऊ नान्हे हकवे॥ पाणिपि
वननाटे ई॥ सो चंडालका त्रपहे
इसत्री विवाही होई॥ वडेऊलके

५ ग्रहलजागान॥ वैमेरादोषदेठे
१५ तिसकाण्यागाके॥ सोचेडालका
दुपैदे॥ किभहुष्ढोवैदोग्रसवी
या॥ कसनालयोतकेरकस
नालडभदेहि॥ सोचेडालकाउ

15

पदेः। हरे तेश्चयथवानेउकोऽश्चति
ष्पिश्चारः याम भऽहृवे॥ अरुनाण
सकनिनारे वंश्चापकोषावे॥
सोचजलकाज्ञपदे॥ अष्टमेत
वमेसरु नेतालःसवीह्नोसग

५ भिती॥ आपकोब्रह्मावेलापा
१५ वै॥ रु सकोनादेवै॥ सोवंझाल
15 काइपदे॥ पंतीयाविषकाऊ
वंझालहे॥ पशुयाविषयादे॰
भवंझालहै॥ जतीयाविषको

यंचंडालहै॥ब्रह्मानषविवे
तिरकचंडालहै॥ हेरावाती
नेजाईराजाजायिषिरा॥उतके
काऊपकचंडालहावपरघडा
है॥ब्रह्मणपानीहै॥भीमसीनदे

प॰ घाजोसतनकाहितुहो। जाईक·
१६ रिराजाजीयाषिरकोकहतम
याहै॥ हेराजाजी। मानंगाहारेवि
16 षेप्रायाहै॥ मिरि। विषैकोयत·
होकरनो। परजीकेसाहे। षा·

स्मादरमीहै॥ रमकादोषनाही॥
जुधिष्टिरउवाच॥ हेभीमसेनतैंकां
करयाहै॥ वडाकामहै॥ वाकाद
जहै॥ भीमसेनउवाच॥ हेराजाजेत
खतु॥ जोमैरोषियाहोगयाहै॥

प· सेसन॥ इदंवंजलवै॥ द्वारपारव
१७ छावचनकरनाहै॥ मीरसाथ·
17
रपानकरनेभयाहै॥ ग्रहयवाति·
वियवातहै॥ जोधिष्टिरउवाच
हैभीमसेनसतिकउ॥ हेपाड

वनकाप्रवृत्तकैसाहै॥ परमात्मा
है॥ हे भीमसेन॥ औसकारूपका
है॥ कैसतरांदामानघहै॥ वैांक
हेगासवजानदाहै॥ ढारवविघजो
चंडालहै॥ वारूपानिसका॥ भीम

पं॰ मीनउवाच॥ हेराजानीकोकिला
१८ केकैसावातनहै॥ हरनकीत्वा
रितसकानेत्रहै॥ ब्रहलंभीरा
रटनहै॥ ब्रहवडेपैरहै॥ ऋषि
षिरोवाच॥ हेभीमसेनजाइड

18

गाचारहै ॥ अरुचंडालहै ॥ अरुपा
पकरभीहै ॥ वगैरजानेमेनहीं
आवता ॥ भीमसेनोवाच ॥ हेराजा
जीजोअतिथीआवे ॥ तिसदा
कुलकामरकुताहै ॥ जथाशक्ति

प
१९

19

उसकीप्रजाकरणागी॥जतिकीई
कोईहोयधरमहै॥हेराजाजीजि
सकाबलजातीहै॥तिसकेस
जाकरे।॥इहवचनमानतेहे॥यु
धिष्ठिरउवाच॥जोकोईहारतोआ

याईभाटेसमग्रीलेयावो॥उसकी
प्रजाकरेहै॥चंद्रलोवाच॥हेराजा
जीइरभलकोराजाकाबलहै॥
ब्राह्मणकोवेदकाबलहै॥स्त्र
धकेरूपकाबलहै॥तसकरोको

यं॰ भ्रांतीकाबलहै॥बालककोरो
२५॰ वनकाबलहै॥पक्षीयाकोआ
काशकाबलहै॥मछीकोपा
णींकाबलहै॥परमव्रमतनदाब
लहै॥हेपांडवेनेदननतमसबउर्वं

लको।दानदेवैताकोटिजपका
फलहोताहै॥ जोकोईपरदेसको
होवे॥ अरुभूषाहोवे॥ तिसको
अनदेवैताजपकापरमहोता
है॥ श्रीहरिभगवानजीकहते

प· है॥ तिसका वडा पसिद्धै॥ ५॥ हरि·
११ तैश्रावैदेवता है॥ इसथान प·
र आवै॥ जो कोई अतिथी ग्रद्धवि
विधपावै॥ तिसको भोजन दे
वे॥ सो तिसको सदगति वेछप॥ प

तिहैवै ॥ जुधिष्टिरउवाच ॥ जिस
के ग्रहविषे अनताहोवै ॥ अरके
ई अतिथ आवै ॥ ताउसकोकादे
वै ॥ अतीतोवाच ॥ हेराजाजीआव
लाकदाहे ॥ अथवावेरि ॥ अथ.

५ वाउक्रहोवै॥जैसेसकोतितैसी
११ उसकीसजाकरै॥सोसवर्गावि
षैपापतिहोवै॥अरुजोहार
परप्रीतिपहोवै॥अरुहरषा·
नाकरै॥उसकापानीहरदाव

गावरदैः॥ ब्रह्मरेदेवीमासवरा

वरहैतिसको॥ ब्रह्मजोप्रतिपद्य

वै॥ तांपितरात्रह्मरेदवनात्रावे

जाने॥ ब्रह्मजोपेद्रलोकरमके

येप्रजासभउसकौत्रावैजानी

प॰ अरुजोसेवासजाकै॥ अरुभावउ
११ नकोकै॥ अरुजोदयावानहोवै
23 अरुअतिथिकोसजेनाहो॥ तोज
गिकायमैतिष्फलहोवै॥ अप॰
वाचौरहोवै॥ अपवाशत्रुहोवै॥

अथ वातै जब वाती होवै ॥ अरु बल
है के आवै ॥ पाछ प्रजा है सं प्रलोक
र के आवै ॥ अथ मता जो कोई आ
वै ॥ सो विश्वरूपी जीव है ॥ जो को
ई तिस कौ प्रजा करी ॥ नास्तरण·

प॰ विषप्रापतिहोवै। अथपवातीर्थ
२५ विषेस्नावै। अथपवाणछरउजोको
रिखै॥ तहांउसकेरजाकरे॥ ता
नीर्थदाफलप्रापतिहोवेहै॥
वगैरमंत्रहोमकरै॥ तिलविना

24

श्राद्ध करै ॥ तिलविनाष्णा करै ॥
अरुचा विषे वालकी रितवती
होई ॥ नासता कुलांन्ह सदे ॥
अथवा तिवल ॥ अथवा वि-
लाहै वै ॥ अथवा गादा होवै ॥

पं. २५ अथवाऽकनाद्दैवै ॥ अथवास्म

25 करद्दैवै ॥ नाश्वमेयजम ॥ पका

द्दैवै ॥ जोपायविघ्न[का]कोऽनकेस्वाग

रथाः ॥ ४

जोपिहिरोवाच॥ हेभ्रातीनः इह्यधर्म
॥ कहाहोवे॥ भ्रहाकिउधर्मवरत
दाहे॥ किउधर्मथ्यापिभ्राहे॥ भ्र
हाकिउधर्मइराकरीहे॥ भ्रनी·
तोवाच॥ सम्पाते उतपानिह्रोंभ्रा

प. २९ है॥ धर्मदयाविषे धर्मवर्तदा है॥
श्रेहनमाविषे धर्म थापिआ है॥
26 क्रोधरूपी धर्म है॥ तिसकाना
मकीतै है॥ जुधिष्टिरोवाच॥ धर्मद
र्माविषे धर्मकौनता है॥ श्रेष्ठवाति

षेमित्रकोनहै॥अरुस्थानरविषे
मित्रकोणहै॥अरुमरतसमेधा
मित्रकोनहै॥श्रीतीनउवाच॥वि
षयाजोहैसोपरदेसविषेमित्र
है॥१ स्त्रीघरविषेमित्रहैपतिव्र

५ ता॥५॥ अकथनचो आशातना विषे मि
१८ थैहै॥ अकहदान क्षेत्र समे का मि
27 थैहै॥ जयोषिरावा चा॥ देश्रती
नांके यो उत्पति होइ है॥ मे यरु
वि॥ अके हसी स्वश्रता तिथ बदन

है ॥ किंद्दीमहब्रसातिब्राम्पिरेहै
किंद्गीमहब्रसातिनेवेदनकः
रीहै ॥ श्रीतउवाच ॥ ब्रलानेउत
पतिहोईमहब्रसांतिमहब्रसाति ॥
ब्रलामहब्रसातिनैवेदनकरी ॥

य
२८
28

गायत्रीब्रह्मवेदोंईहिसबग्रतति
प्रवर्त्तितहै ॥जुधिष्टिरउवाच॥
जोवेद्रमेदापरवलोगानाका
प्रतहै॥हराजपरवकाकाप
नहै॥ब्रह्मनीयपावतकोईका

क्यापुंनहै ॥ अरुजोघरविषेघृत
थेदमनाकरैहै ॥ अरुभजनक
रै ॥ तिसकाक्यापुंनहै ॥ अतीतउवा
चा ॥ जोचंद्रपरवविषेदानकरै ॥
तोलषगुणापुंनहोई ॥ अरुजो

५ सरजपावलेगाउनकोरै सोष्टम
२९ गुणाउनवाचिताहै॥ अष्टतीर्थ
विधिउनकातेहै॥ सोलहउ
लावाचिताहै॥ अरुजोचावविधि
वलीवातिउनकानाहै॥ सो

29

दसकोटीगुणावधिताहै ॥ ऋषि
शिवउवाच ॥ वनारसविषेजोकि
रिजोव्रतकरैतिसकाक्याफ-
लहै ॥ अरुजमनाकेअसनान
काक्याफलहै ॥ अरुगंगाकेअ

५ सनानकाक्याफलहै॥ब्रह्मगाया
रू जीकेपिनदपिंडकाक्याफलहै॥
50 श्रीनाथउवाच॥ बनारसविषेजा
ईतांवडापुनहै॥ स्रहजमनाके
स्रमनानकीपैजमकोस्रासरे

ते रहित होते है ॥ गंगाजी के स्मरना
न करणे करि ॥ पापों ते मुक्ती हो
है ॥ अरु गंगा विषे पिंड देणे करि
पितर जो है सो स्वर्गां विषे जाइ प्रा
प्त होते है ॥ युधिष्ठिर उवाच ॥ जिस

पं. ३८ केप्रह्रविषेपितानहोवै॥ब्रहमा
ताभीनहोवै॥ब्रहमाईभीनहो
31 वै॥ताउसकेकैसेकीरसपहोवै
श्रतीसउवाच॥ उपेतसमानाकी
केनातृ॥सपानेनहोपिताकीरके

जात्॥ दयाजोहे॥ तिसजेहै तिस
न्भा। कोकारिजाणे॥ तदासो।
तिसकोहोवै॥ कहलोनदिति
मैलमनवहोवै॥ ज्ञुधिष्ठिरउवा
च॥ किसकारमकारकेउपोइंदा

च· है॥किसकर्मकरकेसषीहोता·
३२ है॥किसकर्मकरकेदरिद्रहोता
32 है॥किसकरमकरकेकिगारवावि
धेफेरफेरजन्ममलेताहै॥ईश्व
रउवाच॥देवतोंरेमजानाकरे

तांउबीहोदाहै ॥ जोअनदानेना
होकेतिसोगार्भविषेफेरफेर
आवतेहै ॥ अहजोपराहोविषे
मनुषदेषतेहै ॥ तेमनुषनाक
विषेअहगारभविषेफेरअमने

पं· जतनेआवतेहै॥ अरुजोदेवता:

२२ केसजाकरे॥ अरुअनदानदेवै

33 सैमतीअरुआरवलावपतीहै

जुधिष्टिरउवाच॥ केतेअंउलक्ष:

कूपासहै॥ केतेगगानमेनारेहै॥

केतेपारवरषतमेवाहै॥केतेरस
तेविसतनागाहै॥अतीतउवाच॥चत
रखेउलखकासहै॥उखेउलग
गानमैनारेकाहै॥दसहादस
वेरषतमेवाहै।आदसतिवसं

य०
३५
35

दगाहै ॥ ज्रुधिष्टिर उवाच ॥ मातरे
जेदिवाकेन्याहे ॥ पिताजिसकु
मारिका ॥ ब्रलवाक्रामिदंसम०
ध ॥ कसदेहीसमज्ञवे ॥ ग्रतीन
उवाच ॥ जेमातेलाविषतेलहो

दाहै॥ ऐसेंकारविषेश्रगातिहेदा
है॥ ऐसांदेहविषेश्रनहै॥ जैसेहृय
विषेवेऊहै॥ वशिष्ठउवाच॥ हे
श्रनीतश्रमहोत्रदावेलाहोया
है॥ न.श्रालिकेत्रांनिथजपापति

प· होईयाहै॥मैजोहांतेरेसेवाक·
३५. जाकेकहताहां॥अतीतउवाच
35 मैजहांमांकेतीरेभोजनता·
हींकरदा॥अकराजाकेग्रहावि
षभोजनतैमैनाहींकरदा॥अक

राजाके अनविषे दोषहै ॥ जषि
षिरउवाच ॥ हे अतीतभोजनाकिं
नाहीकरदा ॥ इसअननोदोष
कोणहै ॥ किंविवर्जितहै ॥ अ
ठासीहजाररषालणनिमित्रा

॥ ५.
२८

तिभोजनकरदेहे॥ मेरेग्रहहोवे
वे॥ अतीतउवाच॥ हेराजामाइया
केलोभकरकेमोहछोडेहैन
कैसेहैमायाजिसनेयेलोकेमो
होछोडेहैन॥ हेराजाजी॥ इह्या

86

लमति है॥ राजे का अन्न है॥ सो महा
अपवित्र है॥ हे राजा अन्न का मांस
वलादै ष्ठ दापर॥ राजा का अन्न व
ला नाही॥ विष समान है॥ हे रा
जा जैसी नदी या का जल समुद्र

५८ विष्नजारिपैदाहै। तैसेहीराजेकी
ग्रहविषेसभसेकाधनआरपै
दाहै॥ सोलैनाजोबानाहो॥ मह
मंत्रकोरोकेसमर्थहोनाहै॥ जैसेर
सवान। तैसाएककाकामयाबहै

जैसे सदसत्कौं मिथ्या है तैसा एक योगी
जैसे सदस योगी तैसा एक वेसवा
है॥ जैसे सदसंविसवादी न है॥ तैसा
एक राजा का दान है॥ वचन क
हि करि उठ घडा होया॥ राजा॰

प ३८ विंनावानुद्धोह्या॥ अर्जुनोवाच
जेवाःह्याद्या॥ सोभीउद्विनाया॥ अ
द्यसीद्वजरवलणजोद्या॥ अर्जु
तितांविभरजाद्वे॥ अर्जुनराज्ञांवि
नावानद्वोःका॥ करोयकेवं

चेनकरनेलागे ॥ युधिष्टिरउवाच ॥
हेभ्रातीनतेमेराजगहरकीताहे ॥
भ्रहसबब्रालाणउटगईहेन ॥
हेभ्रातीनमेभ्राइ ॥ भ्रपबाजग
किसपोकरावा ॥ भ्रहजगपजा

१० ।१।

पं॰
३९

किमटीकरो॥ मैमैकर्मकीहै
मैमभहृष्याह्लोहैहै॥ चिंतावात
ह्लोकरिजेयिचिहरकहहतेभया
श्रववावजाल॥ अयवाविला॥
मरश्रपमरभावतेसंमारविष॥

भावनाकरनी॥ सोपरमेनेहोवै
जोपापीवरग्रावै॥ अरुकोईह
त्याकरिपावै॥ जोवारहिविष
कीताहोवै॥ अरुअनिष्टिको
मजेताही॥ सोसभमनिष्फलहै ८४

५ ४. सतीतउवाच॥ हेराजाजीमेसति
काहेयाहै॥ मेरेताईदोषनादी
वण॥ हाउमेकातिकमेमाघ
मै॥ इसनानदाननाकरै॥ हेर
ाजाजीपथीहै॥ जुधिष्टिरउवाच॥

50

देअतीतजोहैसोमेरादेहहै॥मे
जहासभआवेजाणो॥मेरेजोग
वेष्यागाया॥परमेसफलहोया
तेरेदरसनकरके॥अफलतअति
घदेवहै॥तेरांचंडालकारूपमे

५ देवस्थाया हे॥ हे अतीतर केता
५८ नेरंड हे॥ रकेता अला हे॥ अथवा
५१ विलहे॥ तं जोहे वेजलकारे
पापाति कविमे गपिना आरया
हे॥ धरमोवाच॥ हे अवतामधन

है पवन है ॥ सभ नाश हावृ जात
ले वाला है ॥ हे राजा मैं तेरो पिता
है ॥ महं तें पुत्र है ॥ हे राजा तें सति
जाग ॥ हे राजा तें साप है ॥ तेराज
सपन है ॥ तेरा वंश पवन है ॥ तेरा

च
५२
52

ऊलपनेहै ॥ तेराजसहस्रिणियासी
स्वर्गेविषै ॥ मैतेराद्यासनकराले
तेवराविषैप्राप्तयाहै ॥ जिसक्ष
पनेग्रनकाराहै ॥ सोदेवा
नातेवराविषैप्राप्तयाहै ॥ उपि

शिवोवाच॥ आज मेजनम सफल है॥ आजमेरेतपस्या सफल है॥ आज मेराजनम अभीयन है॥ तेरा दरस नकीता है॥ मेपा पते मकिदोई याहै॥ औरजितने लोभकरा मदे

प
८३
43

तिनामेमुक्तिद्दोईयाहै॥ परमेवा
चा॥ देराजाजीतेरोसारवलाव
इतद्दोवै॥ हेपांडवपुत्रतेंवरै
जीवद्दोद्दि॥ संवादकरकेग्र
राजापरमदेवलोकविषेजा

ई प्रापतिभया॥ परमकरिकेस
त्रभीहरहोदाहै॥ परमकरीके
ग्रहभीहरहोदाहै॥ जिथेपराम
उथेदया॥ इतिश्रीपरमहंसबादेहंस
तोत्र॥

ध.

४४

